ईंटें, मनके तथा अस्थियाँ

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» हड़प्पा सभ्यता: शर्तें, स्थान और समय

प्रश्न 1 (आसान). हड़प्पा सभ्यता को और किस नाम से जाना जाता है?
उत्तर – सिंधु घाटी सभ्यता

प्रश्न 2 (आसान). हड़प्पा सभ्यता का कुल समय काल क्या था?
उत्तर – 6000 ईसा पूर्व से 1300 ईसा पूर्व

प्रश्न 3 (मध्यम). हड़प्पा सभ्यता के सबसे विकसित चरण को क्या कहते हैं और वह कब से कब तक था?
उत्तर – परिपक्व हड़प्पा चरण, 2600 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व तक।

प्रश्न 4 (कठिन). हड़प्पा सभ्यता भारत के किन-किन आधुनिक राज्यों और पड़ोसी देशों तक फैली हुई थी?
उत्तर – भारत में जम्मू, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र। पड़ोसी देशों में पाकिस्तान (सिंध, बलूचिस्तान, पंजाब) और अफ़गानिस्तान।

» निर्वाह के तरीके और कृषि प्रौद्योगिकी

प्रश्न 5 (आसान). हड़प्पा सभ्यता के निवासी अपने भोजन में किन-किन अनाजों का प्रयोग करते थे?
उत्तर – गेहूँ, जौ, दालें, सफ़ेद चना और तिल।

प्रश्न 6 (आसान). खेती के लिए हड़प्पावासी किस जानवर का उपयोग करते थे?
उत्तर – बैल।

प्रश्न 7 (मध्यम). हड़प्पा स्थलों से मिले जानवरों की हड्डियों से हमें उनके भोजन की आदतों के बारे में क्या पता चलता है?
उत्तर – यह पता चलता है कि वे मवेशियों, भेड़, बकरी, भैंस और सूअर जैसे पालतू जानवरों का मांस खाते थे। जंगली जानवरों (जैसे हिरण, घड़ियाल) का भी सेवन करते थे, लेकिन यह स्पष्ट नहीं कि वे खुद शिकार करते थे या दूसरों से मांस प्राप्त करते थे। मछली और पक्षियों की हड्डियाँ भी मिली हैं।

प्रश्न 8 (कठिन). सिंचाई के लिए हड़प्पावासियों द्वारा उपयोग की जाने वाली विभिन्न तकनीकों का वर्णन करें।
उत्तर – हड़प्पावासी सिंचाई के लिए नहरों का उपयोग करते थे, जिसके अवशेष अफगानिस्तान के शोर्तुघई में मिले हैं। इसके अलावा, कुओं से पानी निकालकर सिंचाई की जाती थी, और गुजरात के धौलावीरा में बड़े-बड़े जलाशयों का निर्माण किया गया था, जहाँ बारिश का पानी इकट्ठा करके कृषि के लिए इस्तेमाल किया जाता था।

» हड़प्पा संस्कृति के योजनाबद्ध शहर: मोहनजोदड़ो का उदाहरण

प्रश्न 9 (आसान). मोहनजोदड़ो शहर कितने मुख्य भागों में बंटा था?
उत्तर – दो मुख्य भागों में - दुर्ग और निचला शहर।

प्रश्न 10 (आसान). हड़प्पा सभ्यता की ईंटों का सामान्य अनुपात क्या था?
उत्तर – लंबाई, चौड़ाई और ऊँचाई का अनुपात 4:2:1 था।

प्रश्न 11 (मध्यम). मोहनजोदड़ो की जल निकास प्रणाली की दो खास बातें बताइए।
उत्तर – हर घर की नाली गली की नाली से जुड़ी थी, और मुख्य नाले पकी ईंटों से बने और ढके हुए होते थे जिन्हें सफाई के लिए हटाया जा सकता था।

प्रश्न 12 (कठिन). दुर्ग और निचले शहर के बीच मुख्य अंतर क्या था, और यह क्या दर्शाता है?
उत्तर – दुर्ग छोटा लेकिन ऊँचाई पर बना था, जहाँ संभवतः विशिष्ट सार्वजनिक संरचनाएँ थीं। निचला शहर बड़ा लेकिन नीचे बना था, जहाँ आम लोग रहते थे। यह विभाजन हड़प्पा समाज में एक तरह की सामाजिक भिन्नता या प्रशासनिक व्यवस्था को दर्शाता है।

» नालों का निर्माण और गृह स्थापत्य

प्रश्न 13 (आसान). हड़प्पा में सड़कों और गलियों का पैटर्न कैसा था?
उत्तर – ग्रिड पैटर्न, एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं।

प्रश्न 14 (आसान). हड़प्पा के घरों में कौन सी जगह सबसे ज़रूरी थी?
उत्तर – आँगन।

प्रश्न 15 (मध्यम). हड़प्पावासी अपनी निजता (privacy) का ध्यान कैसे रखते थे?
उत्तर – भूमि तल पर खिड़कियां नहीं थीं, और मुख्य द्वार से सीधे घर के अंदर या आँगन में नहीं देखा जा सकता था।

प्रश्न 16 (कठिन). मोहनजोदड़ो में कुओं की संख्या लगभग कितनी थी, और उनका उपयोग कैसे होता था?
उत्तर – लगभग 700 कुएँ थे, जिनमें से कई ऐसे कमरों में थे जहाँ से बाहर के लोग भी पानी पी सकते थे, मतलब सार्वजनिक उपयोग।

» सामाजिक भिन्नताओं का अवलोकन: शवाधान और विलासिता की वस्तुएँ

प्रश्न 17 (आसान). हड़प्पा सभ्यता में सामाजिक भिन्नता जानने के लिए पुरातत्वविद किन दो मुख्य तरीकों का इस्तेमाल करते हैं?
उत्तर – शवाधानों का अध्ययन और विलासिता की वस्तुओं की खोज।

प्रश्न 18 (आसान). निम्नलिखित में से कौन सी वस्तु विलासिता की श्रेणी में आ सकती है: मिट्टी का चाक, सोने का हार, पत्थर की चक्की?
उत्तर – सोने का हार।

प्रश्न 19 (मध्यम). क्या हड़प्पा के शवाधानों में मिस्र के पिरामिडों जितनी बहुमूल्य वस्तुएँ मिली हैं? संक्षेप में बताएं।
उत्तर – नहीं, हड़प्पा के शवाधानों में आमतौर पर मिस्र के पिरामिडों जितनी बड़ी मात्रा में बहुमूल्य वस्तुएँ नहीं मिली हैं। हालांकि कुछ कब्रों में आभूषण और मृदभांड मिले हैं, जो मृत्यु के बाद उपयोग में विश्वास दिखाते हैं, पर उनका पैमाना मिस्र जितना बड़ा नहीं था।

प्रश्न 20 (कठिन). फ़यान्स से बने लघुपात्रों का मोहनजोदड़ो और हड़प्पा जैसी बड़ी बस्तियों में केंद्रित होना क्या दर्शाता है? कालीबंगन जैसी छोटी बस्तियों में इनके न मिलने का क्या मतलब हो सकता है?
उत्तर – फ़यान्स से बने लघुपात्रों का बड़ी बस्तियों में मिलना यह दर्शाता है कि ये वस्तुएँ दुर्लभ, कीमती और बनाने में जटिल थीं, इसलिए इन्हें अमीर या प्रभावशाली लोग खरीदते थे जो इन बड़े शहरों में रहते थे। कालीबंगन जैसी छोटी बस्तियों में इनका न मिलना यह बताता है कि छोटी बस्तियों के लोग शायद इतनी महंगी और विलासिता की वस्तुएँ नहीं खरीद पाते थे, जो सामाजिक-आर्थिक अंतर को स्पष्ट करता है।

» शिल्प-उत्पादन और उत्पादन केंद्रों की पहचान

प्रश्न 21 (आसान). हड़प्पा सभ्यता में कौन-कौन से मुख्य शिल्प होते थे? कोई दो बताओ।
उत्तर – मनके बनाना, शंख की कटाई, धातुकर्म।

प्रश्न 22 (आसान). पुरातत्वविदों को किसी जगह पर शिल्प का काम होने का पता कैसे चलता है? कोई एक निशान बताओ।
उत्तर – कच्चा माल, औजार, अधूरी वस्तुएँ, कूड़ा-करकट।

प्रश्न 23 (मध्यम). चन्हुदड़ो किस खास शिल्प उत्पादन के लिए मशहूर था?
उत्तर – चन्हुदड़ो मुख्यतः मनके बनाने के शिल्प उत्पादन के लिए मशहूर था।

प्रश्न 24 (कठिन). कार्नीलियन के मनकों को लाल रंग देने के लिए किस प्रक्रिया का इस्तेमाल किया जाता था?
उत्तर – कार्नीलियन के मनकों को लाल रंग देने के लिए, पीले रंग के कच्चे माल को उत्पादन के विभिन्न चरणों में आग में पकाया जाता था।

» माल प्राप्त करने संबंधी नीतियाँ और सुदूर क्षेत्रों से संपर्क

प्रश्न 25 (आसान). शंख प्राप्त करने के लिए हड़प्पावासियों ने कहाँ बस्तियाँ बसाईं?
उत्तर – नागेश्वर और बालाकोट

प्रश्न 26 (आसान). मेसोपोटामिया के लेखों में हड़प्पा क्षेत्र के लिए किस शब्द का प्रयोग किया गया है?
उत्तर – मेलुहा

प्रश्न 27 (मध्यम). हड़प्पा और ओमान के बीच व्यापार के क्या पुरातात्विक प्रमाण मिले हैं?
उत्तर – ओमानी तांबे और हड़प्पाई पुरावस्तुओं में निकल के अंश समान मिलना और ओमान में हड़प्पाई मर्तबान मिलना।

प्रश्न 28 (कठिन). हड़प्पावासी विभिन्न प्रकार के कच्चे माल कैसे प्राप्त करते थे? किन्हीं दो नीतियों का विस्तार से वर्णन करें।
उत्तर – हड़प्पावासी कच्चा माल प्राप्त करने के लिए दो मुख्य नीतियाँ अपनाते थे: 1. स्रोत के निकट बस्तियाँ स्थापित करना (जैसे शोर्तुघई में लाजवर्द मणि के लिए और नागेश्वर व बालाकोट में शंख के लिए)। 2. दूरदराज के क्षेत्रों में अभियान भेजना (जैसे राजस्थान के खेतड़ी क्षेत्र में तांबे के लिए और दक्षिण भारत में सोने के लिए)। इन अभियानों से स्थानीय समुदायों से संपर्क स्थापित होता था और हड़प्पाई पुरावस्तुएँ इन इलाकों में मिलने से इन संपर्कों की पुष्टि होती है।

» मुहरें, लिपि और बाट

प्रश्न 29 (आसान). हड़प्पा सभ्यता में लंबी दूरी के व्यापार में सामान की सुरक्षा के लिए किसका उपयोग किया जाता था?
उत्तर – मुहरों का।

प्रश्न 30 (आसान). हड़प्पाई लिपि को आज तक पढ़ा जा सका है या नहीं?
उत्तर – नहीं, हड़प्पाई लिपि को आज तक पढ़ा नहीं जा सका है।

प्रश्न 31 (मध्यम). हड़प्पाई बाट किस पत्थर से बनाए जाते थे और उनका आकार कैसा होता था?
उत्तर – हड़प्पाई बाट सामान्यतः चर्ट नामक पत्थर से बनाए जाते थे और वे आमतौर पर घनाकार होते थे।

प्रश्न 32 (कठिन). हड़प्पाई लिपि की कोई दो प्रमुख विशेषताएँ बताइए जो उसे हमारी आज की लिपियों से अलग करती हैं।
उत्तर – हड़प्पाई लिपि चित्रात्मक थी और इसमें अक्षरों की संख्या बहुत अधिक (लगभग 375-400) थी, जो यह दर्शाता है कि यह वर्णमाला जैसी नहीं थी। साथ ही, यह दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी।

» प्राचीन सत्ता और शासक

प्रश्न 33 (आसान). पुरातत्वविदों ने मोहनजोदड़ो में किस विशाल भवन को 'प्रासाद' कहा?
उत्तर – एक विशाल भवन को 'प्रासाद' कहा, लेकिन वहाँ कोई भव्य वस्तुएँ नहीं मिलीं।

प्रश्न 34 (आसान). किस सभ्यता से तुलना करके 'पुरोहित-राजा' नाम दिया गया था?
उत्तर – मेसोपोटामिया की सभ्यता से तुलना करके।

प्रश्न 35 (मध्यम). हड़प्पाई समाज में सत्ता के स्वरूप पर विद्वानों के किन्हीं दो अलग-अलग मतों को बताओ।
उत्तर – पहला मत: कोई शासक नहीं था, सभी की सामाजिक स्थिति समान थी। दूसरा मत: कई शासक थे, जैसे मोहनजोदड़ो और हड़प्पा के अपने अलग-अलग राजा।

प्रश्न 36 (कठिन). यह कैसे कहा जा सकता है कि हड़प्पावासी एक प्रकार की लोकतांत्रिक प्रणाली को अपनाते थे?
उत्तर – कुछ पुरातत्वविद तर्क देते हैं कि पुरावस्तुओं में समानता, नियोजित बस्तियाँ, ईंटों के आकार में निश्चित अनुपात और कच्चे माल के स्रोतों के पास बस्तियों की स्थापना यह दर्शाती है कि यह एक ही राज्य था। वे यह भी मानते हैं कि कुछ भवनों और सुविधाओं को लोगों के लिए और लोगों द्वारा बनाया गया था, जो एक लोकतांत्रिक प्रणाली की ओर संकेत करता है।

» सभ्यता का अंत

प्रश्न 37 (आसान). हड़प्पा सभ्यता का अंत लगभग किस वर्ष हुआ था?
उत्तर – लगभग 1800 ईसा पूर्व

प्रश्न 38 (आसान). हड़प्पा सभ्यता के बाद जो नई संस्कृतियाँ विकसित हुईं, उन्हें क्या कहा गया?
उत्तर – उत्तर हड़प्पा या अनुवर्ती संस्कृतियाँ

प्रश्न 39 (मध्यम). हड़प्पा सभ्यता के पतन के दो पर्यावरणीय कारण बताइए।
उत्तर – जलवायु परिवर्तन और वनों की कटाई।

प्रश्न 40 (कठिन). हड़प्पा के शहरों में किस प्रकार के बदलाव आए जो सभ्यता के अंत की ओर संकेत करते हैं?
उत्तर – शहरों का त्याग, बाटों, मुहरों, और विशिष्ट मनकों जैसी चीज़ों का ख़त्म हो जाना, लेखन और दूर के व्यापार का बंद होना, और आवास निर्माण तकनीकों में गिरावट।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. हड़प्पा सभ्यता के समय काल और उसके तीन मुख्य चरणों का वर्णन कीजिए।

› सबसे पहले, हड़प्पा सभ्यता का कुल समय काल 6000 ईसा पूर्व से 1300 ईसा पूर्व तक माना जाता है।

› पहला चरण 'प्रारंभिक हड़प्पा' कहलाता है, जो 6000 ईसा पूर्व से 2600 ईसा पूर्व तक था। यह सभ्यता के शुरुआती विकास का दौर था।

› दूसरा और सबसे महत्वपूर्ण चरण 'परिपक्व हड़प्पा' कहलाता है, जो 2600 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व तक चला। इस दौरान सभ्यता सबसे ज़्यादा विकसित हुई, शहरीकरण हुआ और बड़े-बड़े शहर बने।

› आखिरी चरण 'उत्तर हड़प्पा' है, जो 1900 ईसा पूर्व से 1300 ईसा पूर्व तक था। यह वो समय था जब इस महान सभ्यता का पतन शुरू हो गया था।

उत्तर – हड़प्पा सभ्यता का कुल समय काल 6000 ईसा पूर्व से 1300 ईसा पूर्व था, जिसे प्रारंभिक (6000-2600 ईसा पूर्व), परिपक्व (2600-1900 ईसा पूर्व), और उत्तर हड़प्पा (1900-1300 ईसा पूर्व) इन तीन चरणों में बांटा गया है।

उदाहरण 2. प्रश्न: हड़प्पा सभ्यता के लोग कौन-कौन से मुख्य अनाज उगाते थे और खेती के लिए किन उपकरणों का प्रयोग करते थे?

› स्टेप 1: पहले हम देखेंगे कि पुरातत्वविदों को जले हुए अनाज के दानों से क्या पता चला।

› स्टेप 2: उन्होंने पता लगाया कि गेहूँ, जौ, दालें, सफेद चना और तिल मुख्य अनाज थे।

› स्टेप 3: फिर हम कृषि प्रौद्योगिकी के सबूतों पर ध्यान देंगे।

› स्टेप 4: मोहनजोदड़ो और बनावली जैसे स्थानों से मिट्टी के हल के प्रतिरूप मिले हैं, जिससे पता चलता है कि बैल से हल जोता जाता था।

› स्टेप 5: कालीबंगन में जुते हुए खेत का साक्ष्य मिला है, जहाँ दो फसलें एक साथ उगाई जाती थीं।

› स्टेप 6: सिंचाई के लिए अफगानिस्तान के शोर्तुघई में नहरों के अवशेष और धौलावीरा में जलाशयों का प्रमाण भी मिला है।

उत्तर – उत्तर: हड़प्पा सभ्यता के लोग गेहूँ, जौ, दालें, सफेद चना और तिल जैसे मुख्य अनाज उगाते थे। खेती के लिए वे बैलों द्वारा खींचे जाने वाले हल, नहरों, कुओं और जलाशयों जैसी सिंचाई प्रणालियों का उपयोग करते थे।

उदाहरण 3. मोहनजोदड़ो के शहरी नियोजन की किन्हीं तीन प्रमुख विशेषताओं का वर्णन करें।

› सबसे पहले, शहर का विभाजन याद करें। मोहनजोदड़ो शहर दो मुख्य भागों में बंटा हुआ था: दुर्ग और निचला शहर।

› दूसरा, जल निकास प्रणाली पर ध्यान दें। यहाँ एक बहुत ही योजनाबद्ध जल निकास प्रणाली थी, जहाँ हर घर की नाली गली की नाली से जुड़ती थी और मुख्य नाले ढके हुए होते थे।

› तीसरा, सड़कों और गलियों का पैटर्न सोचें। सड़कें और गलियां एक 'ग्रिड' पद्धति में बनी थीं, जो एक-दूसरे को समकोण (90 डिग्री) पर काटती थीं।

उत्तर – मोहनजोदड़ो के शहरी नियोजन की तीन प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं: 1. बस्ती का दो भागों में विभाजन (दुर्ग और निचला शहर)। 2. सुनियोजित जल निकास प्रणाली। 3. सड़कों और गलियों का ग्रिड पैटर्न।

उदाहरण 4. हड़प्पा शहरों की जल निकास प्रणाली की मुख्य विशेषताएँ क्या थीं?

› पहला कदम, ये प्रणाली बहुत सोच-समझकर बनाई गई थी।

› दूसरा, सड़कें और गलियाँ एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं, जैसे शतरंज का बोर्ड।

› तीसरा, सबसे पहले नालियाँ बनाई जाती थीं, और फिर उनके अगल-बगल घर बनाए जाते थे ताकि हर घर का गंदा पानी आसानी से नाली में जा सके।

› चौथा, ये नालियाँ पकी ईंटों की बनी होती थीं और ऊपर से ढँकी होती थीं, जिन्हें साफ़-सफ़ाई के लिए हटाया भी जा सकता था।

उत्तर – हड़प्पा शहरों की जल निकास प्रणाली अत्यधिक सुनियोजित थी, जिसमें सड़कें ग्रिड पैटर्न में थीं, नालियों को पहले बनाया गया था, और वे पकी ईंटों से ढँकी हुई थीं।

उदाहरण 5. मोहनजोदड़ो से एक कब्र मिली है जिसमें मृतक के साथ शंख के तीन छल्ले, जैस्पर के मनके और सैकड़ों सूक्ष्म मनकों से बना एक आभूषण मिला है। कालीबंगन से एक दूसरी कब्र मिली है जिसमें सिर्फ कुछ मिट्टी के बर्तन हैं। इन शवाधानों के आधार पर हड़प्पा समाज में सामाजिक भिन्नता का विश्लेषण करें।

› पहला चरण: दोनों शवाधानों में मिली वस्तुओं को पहचानें। मोहनजोदड़ो की कब्र में शंख के छल्ले, जैस्पर के मनके, और एक जटिल आभूषण हैं। कालीबंगन की कब्र में केवल मिट्टी के बर्तन हैं।

› दूसरा चरण: वस्तुओं के प्रकार का विश्लेषण करें। शंख और जैस्पर दुर्लभ और कीमती माने जाते थे, इन्हें बनाने में विशेष कौशल लगता था। सूक्ष्म मनकों का आभूषण भी जटिलता और मूल्य दर्शाता है। मिट्टी के बर्तन आम और उपयोगी वस्तुएँ हैं।

› तीसरा चरण: पुरातत्वविदों की 'विलासिता की वस्तुओं' की परिभाषा को लागू करें। मोहनजोदड़ो में मिली वस्तुएं दुर्लभ, कीमती और जटिल तकनीक से बनी होने के कारण 'विलासिता' की श्रेणी में आती हैं। कालीबंगन के मिट्टी के बर्तन 'उपयोगी' श्रेणी में आते हैं।

› चौथा चरण: इन वस्तुओं के वितरण और प्रकार के आधार पर सामाजिक भिन्नता का निष्कर्ष निकालें। मोहनजोदड़ो की कब्र में मिली विलासिता की वस्तुएं बताती हैं कि वह व्यक्ति समाज में ऊँची सामाजिक या आर्थिक स्थिति का रहा होगा। कालीबंगन की कब्र में साधारण वस्तुएं मिलने से लगता है कि वह व्यक्ति सामान्य आर्थिक स्थिति का था। इससे स्पष्ट होता है कि हड़प्पा समाज में सामाजिक भिन्नताएँ मौजूद थीं।

उत्तर – मोहनजोदड़ो की कब्र में मिली दुर्लभ और कीमती वस्तुएँ (शंख के छल्ले, जैस्पर के मनके, जटिल आभूषण) मृतक के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर को दर्शाती हैं, जबकि कालीबंगन की कब्र में केवल मिट्टी के बर्तन मिलना सामान्य स्थिति का संकेत देता है। यह हड़प्पा समाज में सामाजिक भिन्नताओं की उपस्थिति को साबित करता है।

उदाहरण 6. पुरातत्वविदों को हड़प्पा सभ्यता के एक स्थल से कार्नीलियन पत्थर के छोटे टुकड़े, एक छेद करने वाला औजार, और कुछ अधबने मनके मिले हैं। यह स्थल किस तरह के शिल्प उत्पादन के लिए जाना जाएगा?

› पहला, हम देखेंगे कि कौन-कौन सी चीजें मिली हैं: कार्नीलियन पत्थर के टुकड़े (कच्चा माल), छेद करने वाला औजार (उपकरण), और अधबने मनके (अधूरी वस्तुएँ)।

› दूसरा, हम सोचेंगे कि इन तीनों चीजों का संबंध किस शिल्प से है। मनके बनाने में पत्थरों को काटा जाता है, घिसा जाता है, पॉलिश किया जाता है और उनमें छेद भी किया जाता है।

› तीसरा, चूंकि पत्थर के टुकड़े, छेद करने वाला औजार और अधबने मनके मिले हैं, यह सीधे तौर पर मनके बनाने के काम की ओर इशारा करता है।

उत्तर – यह स्थल 'मनके बनाने' के शिल्प-उत्पादन के लिए जाना जाएगा।

उदाहरण 7. हड़प्पा सभ्यता में लाजवर्द मणि और तांबे के मुख्य स्रोत क्या थे, और इन स्रोतों से माल प्राप्त करने के लिए क्या नीतियाँ अपनाई जाती थीं?

› लाजवर्द मणि का मुख्य स्रोत अफगानिस्तान में शोर्तुघई था, जो एक बहुत कीमती नीले रंग का पत्थर था। हड़प्पावासी इस स्रोत के पास ही बस्तियाँ बसा लेते थे ताकि आसानी से माल मिल सके।

› तांबे के मुख्य स्रोत राजस्थान में खेतड़ी और अरब प्रायद्वीप के दक्षिण-पूर्व छोर पर स्थित ओमान (जिसे मेसोपोटामियाई लेखों में 'मगान' कहते थे) थे।

› खेतड़ी से तांबा प्राप्त करने के लिए हड़प्पावासी वहाँ 'अभियान' भेजते थे, यानी अपने लोग भेजकर स्थानीय समुदायों से संपर्क करके तांबा मंगाते थे। यहाँ 'गणेश्वर-जोधपुरा संस्कृति' के अवशेष मिले हैं, जो बताते हैं कि स्थानीय लोग हड़प्पावासियों को तांबा देते थे।

› ओमान से तांबा समुद्री मार्ग से आता था। रासायनिक विश्लेषण से ओमानी तांबे और हड़प्पाई पुरावस्तुओं में निकल के अंश एक जैसे पाए गए हैं, जिससे व्यापार का पता चलता है। हड़प्पा के बड़े मर्तबान ओमान में मिले हैं, जिनसे शायद व्यापार होता था।

उत्तर – लाजवर्द मणि का स्रोत शोर्तुघई (अफगानिस्तान) था, और तांबे के स्रोत खेतड़ी (राजस्थान) और ओमान (मगान) थे। हड़प्पावासी स्रोत के पास बस्तियाँ स्थापित करते थे या दूर के क्षेत्रों में अभियान भेजकर और समुद्री व्यापार के ज़रिए इन मालों को प्राप्त करते थे।

उदाहरण 8. मान लीजिए हड़प्पा काल में एक व्यापारी मेसोपोटामिया से मिट्टी के मटके में कुछ सामान भेज रहा था। उसने मटके के मुंह पर रस्सी बाँधी और उस पर गीली मिट्टी लगाकर एक मुहर लगा दी। जब मटका मेसोपोटामिया पहुँचा, तो उस मुहर का क्या महत्त्व था?

› सबसे पहले, मुहर यह बताती थी कि यह सामान किस व्यापारी ने भेजा है। यह 'प्रेषक की पहचान' थी।

› दूसरा, अगर मेसोपोटामिया पहुँचने पर मुहर की छाप टूटी नहीं थी, तो इसका मतलब था कि रास्ते में किसी ने भी मटके के साथ छेड़छाड़ नहीं की है।

› तीसरा, मुहरों पर अक्सर चित्र बने होते थे, जैसे कोई जानवर, जिससे अनपढ़ लोग भी संकेत समझ जाते थे कि यह किसकी मुहर है या इसका क्या मतलब है।

उत्तर – इस मुहर से सामान की सुरक्षा और भेजने वाले की पहचान दोनों सुनिश्चित होती थी।

उदाहरण 9. हड़प्पा सभ्यता में 'पुरोहित-राजा' की अवधारणा को समझाओ और बताओ कि यह कितनी निश्चित थी।

› पुरातत्वविदों को मोहनजोदड़ो से एक पत्थर की मूर्ति मिली, जिसे 'पुरोहित-राजा' कहा गया।

› यह नाम मेसोपोटामिया की सभ्यताओं में मिले 'पुरोहित-राजाओं' से समानता देखकर दिया गया था, क्योंकि वहाँ धार्मिक और राजनीतिक सत्ता एक व्यक्ति के पास होती थी।

› लेकिन, हड़प्पा सभ्यता में इस मूर्ति के साथ कोई भव्य राजसी वस्तुएँ नहीं मिलीं जो इसके शासक होने का पुख्ता सबूत दें।

› इसलिए, यह सिर्फ एक संभावना है, निश्चित रूप से यह नहीं कहा जा सकता कि यही शासक था, क्योंकि अनुष्ठानों और राजनीतिक सत्ता का संबंध स्पष्ट नहीं है।

उत्तर – हड़प्पा का 'पुरोहित-राजा' एक कल्पना मात्र है, जो मेसोपोटामिया से तुलना पर आधारित है। हड़प्पा में उसकी सत्ता का कोई ठोस प्रमाण नहीं है।

उदाहरण 10. प्रश्न: हड़प्पा सभ्यता के पतन के किन्हीं तीन संभावित कारणों का उल्लेख करें।

› पहला संभावित कारण है 'जलवायु परिवर्तन'। हो सकता है कि मौसम बहुत ज़्यादा बदल गया हो, जैसे बहुत सूखा पड़ना या बहुत ज़्यादा बारिश होना।

› दूसरा कारण 'वनों की कटाई' हो सकता है। लोगों ने शायद बहुत ज़्यादा पेड़ काटे होंगे, जिससे ज़मीन खराब हो गई और खेती मुश्किल हो गई।

› तीसरा कारण 'बाढ़' या 'नदियों का मार्ग बदलना' हो सकता है। सिंधु नदी और उसकी सहायक नदियों में बार-बार बाढ़ आने से शहर बर्बाद हो जाते थे, या कभी-कभी नदियाँ अपना रास्ता ही बदल लेती थीं, जिससे पानी की कमी हो जाती थी।

उत्तर – हड़प्पा सभ्यता के पतन के तीन संभावित कारण हैं: जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, और बाढ़ या नदियों का मार्ग बदलना।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस सभ्यता के प्रमुख स्थलों और उनके समय काल पर सीधे प्रश्न आते हैं, खासकर परिपक्व हड़प्पा चरण पर।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण है! खासकर हड़प्पावासियों की कृषि तकनीकें और सिंचाई के तरीके अक्सर 'साक्ष्य' के साथ पूछे जाते हैं। कालीबंगन में जुते खेत और धौलावीरा के जलाशय जैसे उदाहरण याद रखना बहुत ज़रूरी है।

• हड़प्पा की जल निकास प्रणाली और गृह स्थापत्य पर अक्सर सीधे प्रश्न आते हैं। इसे उदाहरणों के साथ अच्छी तरह तैयार कर लेना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। खासकर 'विलासिता की वस्तुओं' और 'उपयोगी वस्तुओं' के अंतर को उदाहरणों सहित याद रखना।

• चन्हुदड़ो, नागेश्वर, और बालाकोट जैसे छोटे उत्पादन केंद्रों के नाम और वे किस शिल्प के लिए मशहूर थे, यह बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसे अच्छे से याद रखना।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर सीधे प्रश्न आते हैं कि हड़प्पावासी कच्चा माल कैसे प्राप्त करते थे या उनके किन देशों से व्यापारिक संबंध थे। स्रोतों के नाम और व्यापार के सबूत ज़रूर याद रखना।

• हड़प्पाई लिपि की विशेषताओं और उसके अपठित होने का उल्लेख करना बहुत महत्वपूर्ण है। बाटों की 'द्विआधारी' और 'दशमलव' प्रणाली को भी याद रखें, यह अक्सर पूछा जाता है।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। हड़प्पा सभ्यता के पतन के कारणों पर अक्सर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं, इसलिए सभी संभावित कारणों को अच्छे से समझकर जाना।

एक नज़र में रिवीज़न

› हड़प्पा सभ्यता: सिंधु घाटी, 6000-1300 BCE, प्रारंभिक, परिपक्व, उत्तर चरण, विशाल क्षेत्र।
› हड़प्पा: अनाज (गेहूँ, जौ), पशुपालन, हल, नहर, कुएँ, जलाशय.
› सुनियोजित जल निकास, ग्रिड सड़कें, आँगन केंद्रित घर, निजता, सार्वजनिक कुएँ।
› शवाधानों व विलासिता वस्तुओं से हड़प्पा की सामाजिक भिन्नताएँ ज्ञात होती हैं।
› हड़प्पा में शिल्प: मनके, शंख, धातु, मुहर; केंद्र पहचान: कच्चा माल, औजार, कूड़ा-करकट।
› हड़प्पा ने कच्चे माल हेतु स्रोत के निकट बस्तियाँ बसाईं, अभियान भेजे, ओमान व मेसोपोटामिया से व्यापार किया।
› मुहरें (व्यापार, पहचान), लिपि (अपठित, चित्रात्मक), बाट (चर्ट, सटीक)
› हड़प्पा सभ्यता का अंत (1800 ईसा पूर्व) जलवायु, बाढ़, वनों की कटाई के कारण।